परिवहन मार्गजाल और सेवा केन्द्र

डॉ0 खेदू राम यादव
प्रवक्ता–भूगोल,
जवाहर लाल नेहरू स्मारक पी0 जी0 कालेज महराजगंज

भौगोलिक जगत में क्षेत्रीय अन्तर्प्रक्रिया परिवहन एवं संचार के साधनों के माध्यम से सम्पन्न होती है। परिवहन के विभिन्न साधन वस्तुतः उदगम एवं गन्तव्य स्थानों को जोड़ते है। इस तरह उदगम एवं गन्तव्य विन्दु तथा मार्ग आपस में अन्तर्सम्बन्धित होकर मार्ग जाल का रूप धारण करते हैं, जो पूर्णतया सांस्कृतिक भूदृश्य है। मूलरूप में मार्ग जाल विभिन्न मार्गों का एक समुच्चय है, जिसके माध्यम से परिसंचलन सम्भव हो पाता है। कांस्की[1] के शब्दों में विभिन्न मार्गों के अन्तर्सम्बन्धित एवं अर्न्तग्रन्थित स्वरूप के समुच्चय को मार्ग जाल कहते हैं। उल्लेखनीय है कि किसी भी क्षेत्र का मार्ग जाल स्थायी नहीं होता है, अपितु परिस्थितियों के अनुरूप इसमें परिवर्तन एवं परिष्कार चलता रहता है, चूँकि परिवहन मार्ग जाल में भारी पूँजी विनियोग होता है एवं पूँजी विनियोग से आर्थिक विकास में गति आती है। परिणामतः मार्ग जाल संरचना एवं आर्थिक विकास स्तर में सकारात्मक सह–सम्बन्ध होता है। अतः यह वांछनीय है कि हर क्षेत्र में सक्षम एवं गतिशील परिवहन तंत्र का विकास हो। इसी तरह परिवहन मार्गों पर ही सेवा केन्द्रों का विकास अधिक होता है।

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जपनद के विगत अध्यायों में परिवहन मार्गों का विकास और क्षेत्रीय प्रतिरूप, परिवहन मार्ग संरचना एवं अभिगम्यता, सेवा केन्द्रों का निर्धारण एवं पदानुक्रम एवं कार्यात्मक वर्गीकरण का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्याय में परिवहन मार्ग जाल और सेवा केन्द्रों के अन्तर्सम्बन्ध की विवेचना की गयी है। ताकि इस शोध प्रबन्ध के उद्देश्य परिवहन मार्ग जाल एवं सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति को स्पष्ट किया जा सके। इसके लिए सेवा केन्द्रों के विभिन्न चरों , यथा सेवा चक्र, सेवा केन्द्रों का पदानुक्रम उनके प्रभाव प्रदेश वस्तु परिवहन एवं सेवा केन्द्रों की आकारिकी को परिवहन मार्गों के परिप्रेक्ष्य में समझाने की चेष्टा की गयी है।

सेवा चक्र एवं परिवहन मार्ग –

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में सर्वाधिक विनिमय कार्य आवर्ती सेवा केन्द्रों पर होता है। ये सेवा केन्द्र किसी स्थान पर सप्ताह में एक अथवा दो दिन ही विपणन क्रिया–कलाप सम्पादित करते हैं। आवर्ती सेवा केन्द्रों की स्थानिक एंव कालिक अवस्थिति इस प्रकार समायोजित होती है कि उपभोक्ता इच्छित समय पर निकटतम बाजार से अपनी आवश्यकता की वस्तुएं एवं सेवाए प्राप्त कर सकें। एक सेवा केन्द्र की उसके निकटतम विपणन केन्द्र के सापेक्ष में भू–वैन्यासिक अवस्थिति मील, किलोमीटर अथवा मानक दूरी इकाइयों में मापी गई भौगोलिक दूरी से है, जबकि एक सेवा केन्द्र की उसके निकटतम सेवा केन्द्र के सापेक्ष में कालिक अवस्थिति उनके संगत विपणन दिनों को पृथक करने वाली कालिक दूरी से सम्बन्ध होता है।[2] सेवा केन्द्रों की भू–वैन्यासिक एवं कालिक दूरी में विलोम सम्बन्ध होता है[3]। अर्थात निकटतम भू–वैन्यासिक दूरी वाले विपणन केन्द्रों के विपणन दिनों के बीच विपणन रहित दिनों की संख्या अधिकतम एवं अधिकतम भू–वैन्यासिक दूरी वाले विपणन दिनों के मध्य विपणन रहित दिनों की संख्या न्यूनतम होती है।

सेवा केन्द्रों का भू–वैन्यासिक वितरण एवं उनकी चक्रीय पद्धति परिवहन मार्गों पर सम्पादित होने वाले यात्रा व्यय अथवा यात्रा अवधि से सम्बन्धित होती है।

प्रस्तुत अध्ययन में किसी क्षेत्र में परिवहन मार्गों की वर्तमान स्थिति एवं उनके निरन्तर विकास द्वारा विपणन चक्रों पर पड़ने वाले प्रभाव की भी विवेचना की गयी है। साथ ही साथ यह भी देखा गया है कि परिवहन मार्गों के प्रकार एवं उनकी रचना ने विपणन चक्रों को किस सीमा तक प्रभावित किया है। उक्त विश्लेषण हेतु सर्वप्रथम सेवा केन्द्रों को पदानुक्रम एवं परिवहन मार्गों के मानचित्रों को अध्यारोपित किया गया है।

धातव्य है कि पिछले अध्यायों में परिवहन मार्ग जालों एवं सेवा केन्द्रों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन से विदित होता है कि अध्ययन क्षेत्र के पूर्वोत्तर भू–भाग में पूर्ण विपणन चक्रों की श्रृंखला मिलती है, जिसमें जनपद में 20 प्रतिशत सेवा केन्द्र सम्मिलित है। एक दूसरी श्रृंखला पश्चिमोत्तर से दक्षिण पूर्व की ओर पतली पेटी के रूप में वितरित है। इसका कारण यह है कि इन क्षेत्रों में सेवा केन्द्रों की संख्या अधिक एवं परिवहन मार्गों की सम्बद्धता उच्च कोटि की है जबकि जनपद का पूर्वी, मध्यवर्ती, गंगा का कछारी क्षेत्र तथा समीपवर्ती क्षेत्र अपूर्ण विपणन चक्रों के क्षेत्र के रूप में अधिक्य एवं उनकी उच्च स्तर के परिवहन मार्गों से असम्बद्धता है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि विपणन चक्रों के निर्धारण में परिवहन मार्गों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। अतः प्रस्तुत अध्ययन में विपणन चक्रों पर परिवहन मार्गों के प्रभााव को जानने के लिए निम्न दो तथ्यों को आधार मानकर परखा गया है।

1. प्रत्यक्ष सम्बन्ध – उच्च स्तरीय परिवहन मार्गों द्वारा सेवित क्षेत्रों में विपणन चक्र पूरे होने चाहिए।

2. विलोम सम्बन्ध – निम्न स्तर के असम्बद्ध परिवहन मार्गों के द्वारा सेवित क्षेत्रों में विपणन चक्र पूरे नही होगें।

1. प्रत्यक्ष सम्बन्ध – प्रस्तुत अध्याय में यह जानने का प्रयास किया गया है कि अध्ययन क्षेत्र में परिवहन मार्गों के प्रकारों एवं उनकी मार्ग संगमों के प्रकारों को उस क्षेत्र के सेवा केन्द्रों के विपणन चक्रों को किस सीमा तक प्रभावित करते हैं। परिवहन मार्गों के मानचित्र एवं विपणन चक्र के मानचित्र को एक दूसरे पर अध्यारोपित करने से विदित होता है कि जनपद में कुछ ऐसे क्षेत्र हैं, जहाँ उच्च स्तर परिवहन मार्ग हैं। जैसे राष्ट्रीय मार्गों की सम्बद्धता भी अधिक है। परन्तु परिवहन मार्गों का विपणन चक्रों पर कोई प्रभाव नही पड़ा है।

इस सन्दर्भ में जनपद के मध्योत्तर में स्थित विरनों (मंगलवार, शुक्रवार) भड़सर (बुद्धवार, शनिवार) बारही (सोमवार, शुक्रवार) वोगना (बुद्धवार) सेवा केन्द्रों का उल्लेख किया जा सकता है। धातव्य है कि उपरोक्त सेवा केन्द्रों में वरही तथा भड़सर गाजीपुर, गोरखपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। जबकि विरनों प्रान्तीय राजमार्ग पर तथा वोगना जनपदीय पक्के मार्ग पर स्थित है। इन सेवा केन्द्रों की स्थापना के बाद इस क्षेत्र में नये परिवहन मार्गों जैसे कच्चे, सड़कों एवं नहर मार्गों का निर्माण हुआ है।

परन्तु उपरोक्त चारों सेवा केन्द्रों पर बृहस्पतिवार एवं रविवार को बाजार नही लगते है। जिसके कारण विपणन चक्र पूरे नहीं हो पाते। धातब्य है कि इस क्षेत्र में दैनिक सेवा केन्द्र भी नही है तथा जंगीपुर (दैनिक+रविवार, वृहस्पतिवार) सेवा केन्द्र लगभग 10 किमी0 दूर है। इस क्षेत्र में बृहस्पतिवार एवं रविवार को बाजार न लगने से अधिकतम कालिक दूरी तीन दिन की होती है। इन दो दिनों में क्षेत्रीय उपभोक्ता जंगीपुर की उच्च स्तर के परिवहन मार्गों की सम्बद्धता 10 कि0मी0 की भू–वैन्यासिक दूरी की निकट ला देती है। जिसके कारण इन सेवा केन्द्रों पर बृहस्पतिवार एवं रविवार को विपणन दिन की बृद्धि न होकर भू–वैन्यासिक दूरी को समायोजित करने की प्रवृत्ति मिलती है।

जनपद के दक्षिण में स्थित जमानिया तहसील के सेवा केन्द्रों जमानिया (दै0+मंगलवार, शनिवार) बढ़नी (शुक्रवार, सोमवार, बुद्धवार) मलसा कला (बृहस्पतिवार, रविवार) मतसा (वृहस्पतिवार, रविवार) में परिवहन मार्गों का विपणन चक्र पर प्रत्यक्ष प्रभाव परिलक्षित होता है। इनमें मलसाकला, मतसा एवं जमानिया की गाजीपुर सैदपुर प्रान्तीय राजमार्ग पर तथा बढ़नी जनपदीय पक्के मार्ग पर स्थित है। फिर भी विपणन चक्र पूरा हो जाता है, जिसका कारण वृहद अधिवासों की दूर–दूर स्थापना एवं परिवहन मार्गों पर तीन सेवा केन्द्रों की स्थापना हुई है। अतः भू–वैन्यासिक दूरी विपणन केन्द्रों की कालिक दूरी समाप्त कर देती है तथा विपणन चक्र पूरा होता है। अतः कहा जा सकता है कि विपणन चक्रों के निर्धारण में उच्च स्तरीय परिवहन मार्गों की सम्बद्धता का प्रत्यक्ष प्रभाव न होकर सेवा केन्द्रों की भू–वैन्यासिक एवं कालिक अवस्थिति का प्रभाव पड़ता है।

विलोम सबन्ध :–

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में निम्न स्तर के परिवहन मार्गों को दृष्टिगत रखते हुए उनकी सम्बद्धता एवं विपणन चक्रों के अन्तर्सम्बन्ध को परखा गया है। इसके लिए परिवहन मार्गों के मानचित्र एवं सेवा केन्द्रों के मानचित्र को एक दूसरे पर अध्यारोपित किया गया है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि

जनपद में कुछ ऐसे भी क्षेत्र हैं जहाँ निम्न स्तर के परिवहन मार्गों पर विपणन चक्र पूरा नहीं होता है। इस सन्दर्भ में सैदपुर तहसील के मध्य में स्थित देवकली (मंगलवार, शनिवार) यौधिया (सोमवार) एवं सिरगिंठा (वृहस्पतिवार) का उदारहरण दिया जा सकता है। इन विपणन केन्द्रों पर बुधवार एवं शनिवार को बाजार नहीं लगती है। परिवहन मार्गो के मानचित्र को देखने से स्पष्ट होता है कि तीनों सेवा केन्द्र अलग–अलग तीन निम्न स्तरीय परिवहन मार्गों पर स्थित है, जिनको नहर मार्ग एक दूसरे से जोड़ते हैं। उसर प्रधान क्षेत्र एवं नदियों के कछारी क्षेत्र के कारण अधिवास विरल एवं दूर–दूर स्थापित है जिसके कारण नये सेवा केन्द्रों का अभ्युदय नहीं हो पा रहा है। इन सेवा केन्द्रों की कालिक अवस्थिति तो दूर–दूर है लेकिन भू–वैन्यासिक अवस्थिति निकट है परन्तु न तो विपणन चक्र पूरा हो पाता है और न नये सेवा केन्द्र अथवा बाजार दिन की वृद्धि हो पाती है जिसका प्रमुख कारण असम्बद्ध निम्न स्तरीय परिवहन मार्गों की उपस्थिति है। यद्यपि नहर मार्ग सम्पर्क सूत्र का कार्य करते हैं लेकिन वे निम्न परिवहन के साधनों के लिए सुलभ है। जिनका चलना असंवैधानिक है। फलस्वरूप इस क्षेत्रों की जनसंख्या आवर्ती सेवा केन्द्रों की अपेक्षा सादात, सैदपुर, एवं नन्दगंज दैनिक विपणन सेवा केन्द्रों पर जाना उपयुक्त समझती है, क्योंकि ये नगरीय वृहद सेवा केन्द्र विभिन्न प्रकार की वस्तुएं एवं सेवाएं उपलब्ध कराते हैं जिनका उन आवर्ती सेवा केन्द्रों पर सर्वथा अभाव रहता है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि यदि इस क्षेत्र में परिवहन मार्गों की सम्बद्ता को विकसित किया जाय तो नये सेवा केन्द्र अथवा नये विपणन दिन की स्थापना हो सकती है जिससे सेवा केन्द्रों की कालिक दूरी पूर्ण होकर विपणन चक्र पूरा हो सकता है। अतः कहा जा सकता है कि विपणन चक्र की पूर्णता अथवा अपूर्णता में परिवहन मार्गों की मुख्य भूमिका रही है लेकिन भू–वैन्यासिक एवं कालिक दूरी का समायोजन कम महत्वपूर्ण नहीं है।

सेवा केन्द्रों का पदानुक्रम एवं परिवहन मार्ग :–

प्रस्तुत अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि किसी सेवा केन्द्र पर पाये जाने वाले परिवहन मार्गो के महत्व ने सेवा केन्द्रों के पदानुक्रमीय वर्गों को किस सीमा तक प्रभावित किया है। अर्थात यह देखा गया है कि उच्च स्तर (उच्च स्तर के परिवहन मार्गों से तात्पर्य ऐसे मार्गों से है, जिनकी सम्बद्ता अभिगम्यता पर्याप्त हो तथा उन पर परिवहन के गत्यात्मक साधन उच्च स्तर के हों। गत्यात्मक साधनों में वसों एवं ट्रेन को प्रमुखता दी गयी है।) के परिवहन मार्गों एवं मार्ग संगमों पर उच्च स्तर के सेवा केन्द्रों की स्थापना हुई है या नहीं।

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद के प्रतिचयित सेवा केन्द्रों का पदानुक्रम अध्याय चतुर्थ में निकाला गया है जिसमें जनसंख्या एवं सेवा कार्यों के आधार पर पदानुक्रम वर्गों में बाट कर अध्ययन किया गया है। सेवा केन्द्रों की कोटि क्रम को देखने से स्पष्ट होता है कि जिस सेवा केन्द्र पर परिवहन मार्गों की सुविधा जितनी अधिक है। उसी सेवा केन्द्रों का स्तर उच्च है। इससे स्पष्ट है कि केन्द्र स्थलीय सिद्धान्त में वृहद सेवा केन्द्र लघु सेवा केन्द्रों से अधिक महत्व रखते हैं। फलस्वरूप उनकी संख्या भी अपेक्षाकृत कम होती है। उच्च से निम्न वर्ग के सेवा केन्द्रों की अनुपातिक संख्या में उत्तरोतर वृद्धि होती जाती है। यही स्थिति अध्ययन क्षेत्र में भी दृष्टव्य होती है। उच्च कोटि के सेवा केन्द्र प्रायः नगरीय स्तर के हैं तथा प्रशासनिक मुख्यालयों पर स्थापित है।

विधि तंत्र –

परिवहन मार्गों की विशिष्टताओं का सेवा केन्द्रों के पदानुक्रम पर पड़ने वाले प्रभाव के आकलन के लिए प्रतिचयित सेवा केन्द्रों की परिवहन मार्गों से सम्बन्धित विशिष्टताओं की विवेचना कर गयी है। विशिष्टताओं के अध्ययन में परिवहन मार्गों की संरचना एवं अभिगम्यता तथा सेवा केन्द्र के कार्यात्मक वर्गीकरण पर विशेष ध्यान दिया गया है, जो अध्याय तीन एवं अध्याय पाँच में वर्णित है। परिवहन मार्गों के प्रतिरूपों के अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि उच्च से निम्न महत्व के मार्ग प्रतिरूपों पर साधारणतः उच्च से निम्न पदानुक्रम वर्ग के सेवा केन्द्र पाये जाते हैं। इस तथ्य की परख हेतु प्रस्तुत अध्याय में सेवा केन्द्रों पर पाये जाने वाले मार्ग प्रतिरूपों को सेवा केन्द्रों के पदानुक्रम के सन्दर्भ में विवेचित किया गया है।

ध्यातव्य है कि सेवा केन्द्रों को निम्नलिखित चार पदानुक्रमिक वर्ग में बाँटा गया है।

तालिका संख्या 6.1
प्रतिचयित सेवा केन्द्रों का मार्ग प्रतिरूपों पर आधारित पदानुक्रम

पदानुक्रमीय वर्ग	परिवहन मार्गों का प्रतिशत	सेवा केन्द्रों की संख्या	प्रतिशत
प्रथम	दो से अधिक पक्की सड़के एवं रेलवे जंक्शन	10	20
द्वितीय	दो पक्की सड़को द्वारा निर्मित तिराहा, चौराहा	18	36
तृतीय	एक पक्की सड़क अथवा / एक कच्ची सड़क द्वारा निर्मित तिराहा	10	20
चतुर्थ	दो कच्ची सड़कों द्वारा निर्मित चौराहा	6	12
पंचम	एक पक्की / एक कच्ची सड़क तथा रेलमार्ग	4	8
षष्ठम	एक पक्की सड़क / एक कच्ची सड़क तथा जलमार्ग	2	4
	योग	**50**	**100**

तालिका 6.1 के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि यदि केन्द्रों के पदानुक्रम को परिवहन मार्गों के पदानुक्रम से अन्तर्सम्बन्धित किया जाय तो परिवहन मार्गों के क्रमशः उच्च से निम्न पदानुक्रमीय वर्ग में सेवा केन्द्रों की संख्या का अनुपात 10:18:10:6:4:2 आता है इन सेवा केन्द्रों पर दो से अधिक पक्की सड़को के संगम पर कुल 10 प्रतिचयित सेवा केन्द्र गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, जमानिया, सैदपुर, सादात, दिलदार नगर, जखानिया, बहादुरगंज, रेवतीपुर, भदौरा, स्थापित है। जबकि सबसे अधिक 18 सेवा केन्द्र दो पक्की सड़को द्वारा निर्मित तिराहा पर मिलते हैं। विभिन्न प्रतिरूपों पर पाये जाने वाले सेवा केन्द्रों का प्राथमिक आकड़ों द्वारा प्राप्त पदानुक्रम से तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है, जिसका संक्षिप्त विचेचन नीचे दिया रहा है।

प्रथम वर्ग :–

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर में ऐसे मार्ग प्रतिरूप जिन पर दो से अधिक पक्की सड़के, मार्ग संगम बनाती हैं, उच्च स्तर के मार्ग प्रतिरूप कहे गये हैं तथा इन्हें प्रथम वर्ग में सम्मिलिति किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में इस प्रकार के मार्ग प्रतिरूप पर 10 सेवा केन्द्र स्थित है जिसमें गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, जमानिया, सैदपुर, सादात, दिलदार नगर, जखानिया, बहादुरगंज, रेवतीपुर, तथा भदौरा है। ध्यातव्य है कि इस वर्ग के सभी सेवा केन्द्र प्राचीन काल से ही वृहद नगरीय अधिवास रहे हैं जो वर्तमान समय में रेल एवं सड़क परिवहन से देश के दूरस्थ भागों से संलग्न होकर उच्च स्तर के विपणन क्रिया–क्लाप सम्पादित करते हैं जबकि मध्यकाल में बहादुरगंज, सैदपुर तथा मुहम्मदाबाद विकसित हुआ है।

द्वितीय वर्ग –

दो पक्की सड़कों द्वारा निर्मित तिराहा चौराहा प्रतिरूप पर कुल सेवा केन्द्रों की संख्या 18 है जो कुल प्रतिचयित सेवा केन्द्रों के लगभग 36 प्रतिशत है (तालिका 6.1)। पदानुक्रम निर्धारण में कुछ सेवा केन्द्रों – प्रथम एवं द्वितीय वर्ग में सम्मिलित है। मध्यकाल में शेख अब्दुल्ला द्वारा वसाया गया कासिमाबाद केवल स्थल मार्गों से ही सम्बद्ध है। वाराणसी–गाजीपुर राष्ट्रीय राजमार्गों पर स्थित नन्दगंज सेवा केन्द्र की स्थापना नन्दगंज रेलवे स्टेशन के निर्माण के साथ ही प्रारम्भ हुई। इसके अलावा मरदह, शेरपुर कला, सोहबल, जलालावाद आदि सेवा केन्द्र परिवहन मार्गों के निर्माण के बाद उत्तरोत्तर विकसित हो रहे हैं।

तृतीय वर्ग –

गाजीपुर जपनद में एक पक्की अथवा एक कच्ची सड़क द्वारा निर्मित तिराहा, चौराहा के प्रतिरूप पर 10 सेवा केन्द्र स्थापित है जो कुल प्रति चयित सेवा केन्द्रों के लगभग 20 प्रतिशत है। इस वर्ग में सम्मिलित ताजपुर, मालिकपुरा, खानपुर, भुड़कुला, टाटी मुस्तकहाय, करीममुददीनपुर, औड़िहार, नोनहरा,

भीमापार, पिरमी सम्मिलित हैं। ये ऐसे सेवा केन्द्र हैं जो परिवहन मार्गों की स्थापना से पूर्व स्वनाम गाँवों के मध्य विपणन क्रिया–क्लाप करते थे, जो परिवहन मार्गो के निर्माण के साथ–साथ धीरे–धीरे परिवहन मार्गों के संगमों पर स्थानान्तरित हो रहे हैं।

चतुर्थ वर्ग –

जनपद में ऐसे सेवा केन्द्र जो दो कच्ची सड़कों द्वारा निर्मित तिराहा–चौराहा पर स्थापित हैं, मात्र 6 नोनहरा, भीमापार, पिरमी, जखानिया, खालिसपुर, वद्दोपुर सम्मिलित है। ये सेवा केन्द्र प्रारम्भ में निकटवर्ती गांवों की अधिकांश जनसंख्या के प्रमुख सेवा केन्द्र थे। लेकिन वर्तमान समय में कच्ची सड़क से सम्बद्ध होने एवं मुख्य पक्के मार्गों से दूर होने के कारण यह सेवा ग्राम स्तर तक ही रह गया है तथा विपणन क्रिया – क्लाप धीरे–धीरे कम होते जा रहे हैं।

पंचम वर्ग –

पंचम वर्ग में सम्मिलित किये जाने वाले सेवा केन्द्रों की स्थापना एक पक्की अथवा एक कच्ची सड़क एवं रेलमार्ग के सन्धि स्थलों पर हुई है अर्थात में ये सेवा केन्द्र रेलवे स्टेशन के निर्माण के बाद अस्तित्व में आये। इस प्रकार के सेवा केन्द्रों की संख्या 4 है जो कुल प्रतिचयित सेवा केन्द्रों का 8 प्रतिशत है (तालिका 6.1) इस वर्ग में सम्मिलित दूल्लहपुर, सरौली, फुलीचौक, हथियाराम है।

षष्ठम वर्ग –

इस वर्ग में ऐसे सेवा केन्द्रों को सम्मिलित किया गया है जो एक पक्की अथवा एक कच्ची सड़क तथा नदी मार्ग के संगम पर स्थापित है। जनपद में कुल प्रतिचयित सेवा केन्द्रों के 4 प्रतिशत सेवा केन्द्र इस वर्ग में सम्मिलित है, जिसमें गोदउर और फुल्ली चौक अजमल है।

परिवहन मार्गों की सम्बद्धता के आधार पर प्राप्त पदानुक्रम 10:18:10:6:4:2 के अनुपात में आता है। पूर्व पृष्ठों में प्राथमिक आकड़ों द्वारा प्राप्त पदानुक्रमीय वर्ग से तुलनात्मक विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि परिवहन मार्गों की सम्बद्धता एवं सेवा केन्द्रों के पदानुक्रमीय वर्गों में साधारणतः सम्बन्ध परिलक्षित होता है किन्तु अनेक अपवाद भी मिलते हैं। उच्च एवं अति निम्न वर्ग के सेवा केन्द्र परिवहन मार्गों की सम्बद्धता से प्रभावित है जबकि मध्यम स्तर के सेवा केन्द्र परिवहन मार्गों के प्रभाव से अछूते हैं।

सेवा केन्द्र : प्रभाव प्रदेश एवं परिवहन मार्ग –

ध्यातव्य है कि सेवा केन्द्र प्रभाव प्रदेशों का विस्तार एवं आकार परिवहन मार्गों से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित होता है। इस अध्याय में यही इसी सम्बन्ध को परखने का प्रयास किया गया है। अवलोकनीय हे कि सेवा केन्द्र प्रभाव प्रदेशों में परिवहन मार्गों का उत्तरोत्तर विकास प्रभाव प्रदेशों के आकार–विस्तार को प्रभावित करता है। तत्सम्बन्ध में यह परिकल्पित किया गया है कि परिवहन मार्गों की उपलब्धता सेवा केन्द्रों के प्रभाव प्रदेशों को व्यापक बनाने में सहायक होती है।

सेवा प्रभाव प्रदेश पर परिवहन मार्गों के प्रभाव को विवेचित करने से पूर्व सेवा प्रभाव प्रदेश का तात्पर्य, उनका सीमांकन एवं अध्ययनगत जनपद गाजीपुर में बाजार प्रभाव प्रदेशों की सामान्य विशिष्टताओं को जानना समीचिन प्रतीत होती है। ध्यातव्य है कि बाजार प्रभाव प्रदेशों का संक्षिप्त किन्तु सम्यक विवेचन यहाँ प्रस्तुत किया जा सका है।

प्रभाव प्रदेशों का सीमांकन –

प्रभाव प्रदेश के सन्दर्भ में कई सम्बोधनों का प्रयोग किया जाता है जैसे सेवा क्षेत्र पृष्ठ प्रदेश, पूरक प्रदेश आदि। वस्तुतः बाजार प्रभाव प्रदेश उस केन्द्र धारित क्षेत्र को कहते है, जहाँ से अधिकांश क्रेता एवं विक्रेता वस्तुओं एवं सेवाओं के विनिमय के लिए आते हैं[4]। बाजार केन्द्र स्थलीय अध्ययन में श्रीवास्तव[5] ने बाजार प्रभाव प्रदेशों का परिसीमन वस्तु परास एवं उपभोक्ता व्यवहार के आधार पर किया गया है। वस्तुतः ये आधार उपरोक्त परिभाषा की पुष्टि करते हैं। जहाँ तक प्रभाव प्रदेशों के सीमांकन का प्रश्न है, इसमें औसत चलन दूरी को आधार माना जाता है। प्रत्येक सेवा केन्द्र के चतुर्दिक परिवहन मार्गों के सन्दर्भ में उन सभी अधिवासों को प्रभाव प्रदेश के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाता है। जो औसत चलन दूरी के अन्तर्गत आते हैं। ऐसे क्षेत्र जो किसी भी बाजार के प्रभाव प्रदेश में नहीं आते असेंवित क्षेत्र कहे जाते हैं (मानचित्र 6.1)। ऐसे क्षेत्र जो दो या दो से अधिक बाजारों द्वारा सेवित है, अतिव्यापी क्षेत्र

कहे जाते हैं। सेवा केन्द्र प्रभाव प्रदेशों की परिवहन मार्गो के सन्दर्भ में विवेचना करने से पूर्व जनपद के प्रतिचयित सेवा के प्रभाव प्रदेशों की मुख्य विशेषताओं पर ध्यान देना उचित होगा।

प्रतिचयित सेवा केन्द्रों के प्रभाव–प्रदेशों की विशेषताएं –

अध्ययन क्षेत्र में उच्च कोटि के सेवा केन्द्रों के बाजार प्रभाव प्रदेश भी विस्तृत है। ध्यातव्य है कि इन सेवा केन्द्रों पर परिवहन मार्गों के प्रकार एवं उनकी सम्बद्धता भी उच्च कोटि की है। इस प्रकार के सेवा केन्द्रों में गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, जमानिया, सैदपुर तथा सादात का उल्लेख किया जा सकता है। जो पदानुक्रम निर्धारण में प्रथम कोटि में आते हैं। इसके विपरीत क्रमशः निम्न कोटि के सेवा केन्द्रों के प्रभाव प्रदेश संकुचित दिखायी पड़ते हैं। (मानचित्र 6.1) ये सेवा केन्द्र सामान्यतः सीधी पक्की सड़क या अभिगम्य स्थलों पर स्थित हैं तथा परिवहन मार्ग सापेक्षतः निम्न कोटि के है। जो दुलहपुर, सरौली, फुली चौक, हथियाराम, सिघौना, सोनवरसा, आदि हैं।

गाजीपुर जनपद का मध्यवर्ती भाग, दक्षिणी सीमावर्ती एवं उत्तरी नदी तटवर्ती भाग असेवित क्षेत्रों के अन्तर्गत आते हैं। बाजार प्रभाव प्रदेशों से असेवित होने का मुख्य कारण नदियों के कछारी भागों की उपस्थिति एवं परिवहन मार्गों की अनुपलब्धता है। शोध–प्रबन्ध के प्रथम अध्याय के अन्तर्गत प्रादेशिक विशिष्टताओं में नदियों के कछारी भागों में जनसंख्या की विरलता एवं उसका सेवा केन्द्रों पर पड़ने वाले प्रभाव को स्पष्ट किया गया है, जबकि पिछले अध्यायों में परिवहन मार्गों के वितरण के अवलोकन से इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है।

अध्ययन क्षेत्र के कुछ भाग ऐसे भी है, जो एक से अधिक सेवा केन्द्रों के प्रभाव प्रदेश में आते है, इनको अतिव्यापी प्रभाव प्रदेश कहा जाता है। इस प्रकार के क्षेत्र प्रथम कोटि में सम्मिलित गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, सैदपुर, जमानिया एवं सादात सेवा केन्द्रों के प्रभाव प्रदेशों में दृष्टव्य है। (मानचित्र 6.1) ध्यातव्य है कि इनका प्रसार बहुत कम है। अतिव्यापी बाजार प्रभाव प्रदेशों की उपस्थिति इस तथ्य को इंगित करती है कि अध्ययन क्षेत्र में सेवा केन्द्रों की संख्या कम है एवं उसमें वस्तु वैविध्य पाया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र में स्थित परिवहन मार्गों के मानचित्र एवं बाजार प्रभाव प्रदेशों के मानचित्र के अध्यारोपित मानचित्रों के विश्लेषण से विदित होता है कि जो सेवा केन्द्र अनेक परिवहन मार्गों के संगम विन्दु हैं, उनके बाजार प्रभाव प्रदेश भी विस्तृत है एवं अपने से छोटे सेवा केन्द्रों के बाजार प्रभाव प्रदेश को भी अपने में समाहित किये है। उदाहरण के लिए सैदपुर, गाजीपुर, जमानियाँ, मुहम्मदाबाद आदि सेवा केन्द्रों को उल्लिखित किया जा सकता है। इनमें सेवा केन्द्रों की अभिगम्यता अधिक है। क्योंकि की परिवहन मार्गों की सुविधा अच्छी है।वहीं अनेक सेवा केन्द्रों पर परिवहन मार्गों की सम्बद्धता न्यून है तथा निम्न कोटि के परिवहन मार्ग मिलते हैं। उनके बाजार प्रभाव प्रदेश भी संकुचित है। साथ ही साथ सेवा केन्द्रों के बजार प्रभाव प्रदेश उनकी पदानुक्रम निर्धारण में प्राप्त कोटियों के अनुसार भी मिलते हैं। अर्थात जो सेवा केन्द्र पदानुक्रम की कोटि में उच्च स्तर के है उनके प्रभाव प्रदेश भी वृहद है (मानचित्र 6.1)।

यह सर्व विदित तथ्य है कि जो सेवा केन्द्र अपने पृष्ठ प्रदेश के परिवहन मार्गों से जितना ही सम्बन्धित होगा, उसका बाजार प्रभाव प्रदेश भी उतना ही वृहद होगा। लेकिन परिवहन मार्गों के विकास के साथ ही साथ नये–नये सेवा केन्द्रों का आविर्भाव व कटान विन्दुओं पर होने लगता है। परिणाम स्वरूप क्षेत्रीय जनंसख्या दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं के लिए अपने निकटवर्ती सेवा केन्द्रों की ओर उन्मुख होने लगती है। पूर्व स्थापित वृहद सेवा केन्द्रों पर जनसंख्या आवश्यकतानुसार विशिष्ट वस्तुओं के लिए ही जाना चाहती है। अतः परिवहन मार्गों के विकास के साथ–साथ बाजार प्रभाव प्रदेश तो विस्तृत होता है, यह तथ्य सही है, लेकिन कुछ वस्तुओं यथा – वस्त्र, आभूषण आदि के लिए ये सेवा केन्द्र विशेषीकृत हो जाते हैं।

उदाहरण के लिए जंगीपुर एवं हंसराजपुर सेवा केन्द्रों का उल्लेख किया जा सकता है। जब हंसराजपुर सेवा केन्द्र 1970 में अस्तित्व में आया उसकी स्थापना से पूर्व इस क्षेत्र की अधिसंख्य जनसंख्या अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति जंगीपुर सेवा केन्द्र से करती थी। लेकिन 1970 में हंसराजपुर सेवा केन्द्र के स्थापित हो जाने पर इस क्षेत्र से जंगीपुर जाने वाले क्रेताओं एवं विक्रेताओं की संख्या में कमी हुई है। दैनिक आवश्यकता से सम्बन्धित लगभग सभी वस्तुएं हंसराजपुर सेवा केन्द्र पर उपलब्ध हो

जाती हैं तथा कुछ विशेष वस्तुओं कृषि, यन्त्र यहाँ वस्त्र आदि के लिए ही क्रेता विक्रेता जंगीपुर सेवा केन्द्र पर जाना चाहता है।

ध्यातव्य है कि ये सेवा केन्द्र एक दूसरे से 10 किमी0 की दूरी पर स्थित है तथा पक्की सड़क से जुड़े है। इनके पृष्ठ प्रदेश भी कच्ची, पक्की सड़कों एवं नहर मार्गों से युक्त है जंगीपुर सेवा केन्द्र जो 1970 से पूर्व वर्तमान हंसराजपुर सेवा केन्द्र पर सेवित जनसंख्या का मुख्य विपणन स्थल था। अब धीरे–धीरे अपना महत्व खो रहा है। यहाँ आने वाले अधिसंख्य व्यक्ति ऐसे है जो पृष्ठ प्रदेश एव दूरस्थ सेवा केन्द्रों पर विक्रेता का कार्य करते हैं। अतः कहा जा सकता है कि परिवहन मार्गों के विकास के साथ नगरीय क्षेत्रों में स्थित सेवा केन्द्रों के बाजार प्रभाव प्रदेश विस्तृत होते हैं ग्रामीण क्षेत्रों में परिवहन मार्गों के विकास के साथ ही साथ विपणन क्रियायें शसक्त होती हैं परन्तु बाजार प्रदेश संकुचित होते जाते हैं।

उपरोक्त तथ्यों की विवेचना यह स्पष्ट करती है कि गाजीपुर जनपद के सेवा केन्द्रों एवं प्रभाव प्रदेशों में सामान्यतः प्रत्यक्ष सम्बन्ध मिलता है। वस्तु परिवहन सेवा केन्द्रों का एक मुख्य क्रिया–कलाप है। अतः वस्तु परिवहन का परिवहन मार्गों के सन्दर्भ में आंकलन गाजीपुर जनपद के सेवा केन्द्रों एवं परिवहन मार्गों के सम्बन्ध को उभाड़ने में सहायक होगा।

Refrence

1. Kansky, K. J. : "Structure of Transport Network Relationship Between Network Geom-etry And Regional Char-acteristics" Uni-versity of Chicago Depp. Of Geo-graphy Research paper N0. 84, 1963.

2. Bromley, R.J. : The spateal Pattern and Temporel Synchronization of Periodic Markets 1973.

3. Smith, R.H.T., : African Market Places, Temporal Periodietly and Location spaciny, Pp. 319-46 in Meills oux, C (Ed) The Development of Indigencous Trade and Markets in west Africa Oxford University Press, London 1971.

4. श्रीवास्तव, वी. के. एवं विश्वनाथ : बाजार प्रभाव प्रदेशों का सीमांकन , एक विधितंत्र तंत्रीय उपागम, उ0 भा0 भू0 प0 अंक 11 (1) 1975, पृष्ठ 22–34

5. श्रीवास्तव, वी. के. एवं विश्वनाथ : बाजार प्रभाव प्रदेशों का सीमांकन , एक विधितंत्र तंत्रीय उपागम, उ0 भा0 भू0 प0 अंक 11 (1) 1975, पृष्ठ 22–34

हठयोग–नाथ योग

डॉ0 दानपाल सिंह
प्राचीन इतिहास विभाग,
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

'योग' शब्द भारतीय दार्शनिक–चिन्तन की परम्परा से वैदिक काल से ही सम्बद्ध रहा है। इसका प्रयोग वैदिक सन्दर्भों में 'जोड़ने' अथवा 'नद्ध करने' के अर्थ में हुआ है। प्रो0 सच्चिदानन्द मिश्र, भाषा वैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर 'योग' शब्द की प्राचीनता भारोपीय युग तक रेखांकित करते है। वे अग्रेंजी भाषा के योग शब्द को संस्कृत 'योग' का सगोत्र ओर समानार्थी मानते है।[1] आध्यात्मिक साधना के लिए चित्त की एकाग्रता अनिवार्य है और चित्त की एकाग्रता के लिए चित्त की वृत्तियों का निरोध आवश्यक है। इसीलिए पातंजलि–योगसूत्र. में योग को 'चित्तवृत्तियों का निरोध' कहा गया है। भगवद्गीता (6.20) में भी योग द्वारा चित्त के निरोध की बात कही गई है। साथ ही यह भी कहा गया है कि निरुद्ध–चित्त वाला व्यक्ति ही आत्मा–साक्षात्कार करता हुआ परम सन्तुष्टि का अनुभव करता है। इस प्रकार योग की परिभाषा से यह इंगित होता है कि योग के विविध अंग, चाहे वे पातंजल योगसूत्र के अष्टाग्ङ हों अथवा नाथ पंथ के षडाग्ङ, साधना के ऐसे सोपान माने गए जो जीव को उस मुक्तावस्था तक ले जाते है। जिसे दर्शन प्रणालियों में कैवल्य, मोक्ष अथवा निर्वाण की संज्ञा दी गई है।

ऐतिहासिक दृष्टि से योग–साधना की परम्परा को प्रागैतिहासिक काल तक रेखांकित किया गया है। गाउ, कीथ, गार्बे आदि अनेक विद्वानों ने योग–क्रियाओं का उद्गम आदिम कल्पनाओं और रस्मों में माना है।[2] पतंजलि के योग सम्बन्धी पाण्डित्यपूर्ण निरूपण के पीछे भी किंचित मात्रा में आदिम मान्यताएँ विद्यमान थीं। पतंजलि ने योग से उत्पत्र होने वाली जिन विभूतियों अर्थात् अद्भुत और चमत्कारिक शक्तियों का उल्लेख किया है, उनके पीछे निश्चय ही पूर्व प्रचलित परम्परा का प्रभाव था। प्रागैतिहासिक काल में योग के प्रचलन का एक प्रबल प्रमाण हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त एक मुहर पर अंकित योगी की आकृति है जो पद्मासन लगाए ध्यान–मुद्रा में प्रदर्शित की गई है। पुरातत्त्वविद सर जॉन मार्शल ने इसे आदि–शिव माना है जिसकी उपासना पशुपति, योगी और नटराज के रूप में हड़प्पा सभ्यता में प्रचलित थी। योग की परम्परा आगे अनेक धार्मिक–दार्शनिक धाराओं के अन्तर्गत किंचित परिवर्तनों के साथ प्रवाहमान दिखाई देती है। प्राचीनतम वैदिक ग्रन्थ ऋग्वेद के केशी–सूक्त में मौनेय से उन्मादित, जटाजूटधारी, हवा पीते मुनियों का विलक्षण विवरण है। सम्भावना व्यक्त की गई है कि वैदिक समाज की मुख्या धारा की परिधि पर स्थित इन मुनियों की साधना–पद्धति में भी योग–क्रियाओं का प्रमुख स्थान था। एस0एन0 दासगुप्ता के अनुसार योग–क्रियाओं ने विभित्र धार्मिक एवं दार्शनिक सम्प्रदायों में अलग–अलग रूपों में प्रवेश किया। शैव तथा शाक्त सम्प्रदायों ने अपने सिद्धान्तों के अनरूप योग–क्रियाओं का विकास किया। आगे चलकर हठयोग, तंत्र तथा अन्य उपासना–पद्धतियों के विकास पर भी इन क्रियाओं का प्रचूर प्रभाव दिखाई देता है।[3] योग को व्यवस्थित स्वरूप प्रदान करने का श्रेय पतंजलि को दिया जाता है, जो येागसूत्र के रचनाकार थे। उन्होंने न केवल अनेक प्रकार की प्रचलित योग–क्रियाओं का संग्रह वरन इसे सांख्य दर्शन से सम्बद्ध भी किया। वाचस्पति और विज्ञानभिक्षु दोनों ही पतंजलि को योगशास्त्र का प्रवर्तक नहीं वरन्, योग क्रियाओं का संग्रहकर्ता मानते है। पतंजलि नामक व्यक्ति ने पाणिनि की अष्टाध्यायी पर 'महाभाष्य' की रचना की थी। वे पुष्यमित्र शुंग के काल में उत्पत्र हुए थे। पुष्यमित्र के अश्वमेध यज्ञ में उन्होंने पुरोहित की भूमिका का भी निर्वाह किया था। अनेक विद्वान् 'महाभाष्य' के लेखक पतंजलि और 'योगसूत्र' के लेखक पतंजलि को एक ही व्यक्ति मानते है। किन्तु यह मानते हुए कि दोनों पतंजलि एक व्यक्ति नहीं हो सकते, याकोबी ने योगसूत्र की रचना काल 450 ई0 के लगभग निर्धारित किया है। दासगुप्त एवं अनेक अन्य विद्वानों ने यह मत व्यक्त किया है कि योगसूत्र याकोबी द्वारा निर्धारित तिथि से पहले की रचना है। इन विद्वानों के अनुसार दोनो पतंजलियों को एक ही व्यक्ति मानने में कोई कठिनाई नहीं है। पतंजलि के योगसूत्र से एक बात स्पष्ट है कि सही अर्थों में योग कोई दार्शनिक मतवाद नहीं था, वरन इसका आशय कुछ ऐसी क्रियाओं से था जो अत्यन्त प्राचीन काल

से प्रचलित थीं और उन्हें चित्त की एकाग्रता और अति–प्राकृतिक क्षमताओं की प्राप्ति में सहायक माना जाता था। एक सर्वथा स्वतंत्र दार्शनिक मतवाद न होने के कारण ही पतंजलि के दर्शन को 'सेश्वर सांख्य' अर्थात् ईश्वर सहित सांख्य भी कहा गया है।

यहाँ प्रसंगतः यह भी अल्लेखनीय है कि योग–क्रियाएँ जैन और बौद्ध जैसे नास्तिक सम्प्रदायों में भी अज्ञात नही थीं। सुखलाल जी संधवी के अनुसार जैन मत के प्रवर्तक महावीर ने अपने जीवन में बारह वर्ष से कुछ अधिक समय मुख्यतः योगाभ्यास में ही बिताया था। जैनों के मूल धर्मग्रन्थों में भी 'योगांगों को महत्व दिया गया है।[4] गय गौतम बुद्ध ने भी बुद्धत्व की प्राप्ति के पहले छः वर्षों तक मुख्यतः योगाभ्यास ही किया था। बौद्धों के मूल ग्रन्थों में भी योगाभ्यास का महत्व स्वीकृत है। दिड्नाग और धर्मकीर्ति जैसे तर्कशास्त्रियों ने भी प्रत्यक्ष ज्ञान के चार प्रकारो की चर्चा करते हुए। सबसे उच्चकोटि के प्रत्यक्ष ज्ञान को योग–जनित माना। धर्मोत्तर ने बुद्ध द्वारा प्रतिपादित 'चार आर्य सत्य' को योग–जनित प्रत्यक्ष का विषय स्वीकार किया है।[5]

न्याय–दर्शन तक में, जिसका मुख्य प्रतिपाद्य ज्ञानशास्त्र है, गौतम ने योग को स्थान दिया है तथा वैशेषिक सूत्र मे भी कणाद ने योग–साधना के महत्व को स्वीकार किया है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि ब्रह्मसूत्र के तीसरे अध्याय का नाम 'साधन' अध्याय है और इसके अन्तर्गत भी आसन, ध्यान आदि योगांगों का वर्णन है। सुखलाल जी संघवी के अनुसार पतंजलि ने अपने योगशास्त्र की नींव सांख्य–सिद्धान्त पर डाली थी इसीलिए उसके प्रत्येक पाद के अन्त में 'योगशास्त्रे सांख्यप्रवचने' वाक्यांश मिलता है। 'सांख्य प्रवचने' विशेषण से यह इंगित होता है कि सांख्य के अतिरिक्त अन्य दार्शनिक मतों के आधार पर रचित योगशास्त्र भी उस समय विद्यमान थे अथवा रचे जाते थे।[6]

जैसा कि पहले भी संकेत किया गया है योग–साधना को एक व्यवस्थित और वैज्ञानिक–पद्धति के रूप में साधकों के दिशा–निर्देश हेतु सर्वप्रथम महर्षि पतंजलि ने ही अपने योगसूत्र में प्रस्तुत किया। इसीलिए पतंजलि को योगशास्त्र को योगशास्त्र का प्रणेता भी कहा कहा जाता है। कालान्तर में नवी–दसवीं सदी ई0 के लगभग गुरु गोरक्षनाथ ने पतंजलि द्वारा प्रतिपादित योगशास्त्र में कुछ उल्लेखनीय परिवर्तन किए। पूर्वमध्यकाल में योग–सम्बन्धी ये दोनों परम्पराएँ विशेष रूप लोकप्रिय हुई।

जहाँ तक गुरु गोरक्षनाथ का प्रश्न है, उनका ऐतिहासिक स्वरूप उनके विषय में प्रचलित विविध चमत्कारिक कथाओं से इतना अधिक आच्छादित है कि किसी सुनिश्चित निष्कर्ष तक पहुँचना दुष्कर हो जाता है। तथापि उनका आविर्भाव–काल नवीं सदी ई0 का उत्तरार्ध अथवा दसवीं सदी ई0 का पूर्वार्द्ध तर्कसंगत लगता है। वे अपने युग के महान योगी, धर्मनेता, कवि, दार्शनिक एवं लोकनायक थे। उन्होंने वाममार्गी तांत्रिक–साधना के बढ़ते वर्चस्व के प्रभाव से समाज को मुक्त करने तथा सदाचार को धार्मिक उपासना में पुनर्प्रतिष्ठित करने का सार्थक प्रयत्न किया। वे स्वयं संयमी, कामविजेता और ब्रह्मचारी थे। स्त्रियों के प्रति उनके हृदय में सम्मान का भाव था। वे नारी के केवल मातृरूप के पूजक थे और उसे इसी रूप में देखते थे। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार 'गोरक्षनाथ जी अपने युग के सबसे महान धर्मनेता थे। उनकी संगठन शक्ति अपूर्व थी। उनका व्यक्तित्व समर्थ धर्मगुरु का व्यक्तित्व था। उनका चरित्र स्फटिक के समान उज्जवल, बुद्धि भावावेश से अनाविज तथा कुशाग्र थी। जिन दिनों उन्होंने जन्म ग्रहण किया था, उन दिनों भारतीय धर्म–साधना की स्थिति विचित्र थी। शुद्ध जीवन, सात्विक वृत्ति और अखण्ड ब्रह्मचर्य की भावना उन दिनों अपनी निम्नतम सीमा तक पहुँच चुकी थी। गोरक्षनाथ जी ने निर्मम हथौड़े की चोट से साधु और गृहस्थ दोनों की कुरीतियों को विचूर्ण कर दिया। लोक जीवन में जो धार्मिक चेतना पूर्ववर्ती सिद्धों से आकर उसके पारमार्थिक उद्देश्य से विमुख हो रही थी, उसे गोरक्षनाथ ने नई प्राणशक्ति से अनुप्राणित किया।'[7] उन्होंने समाज में व्याप्त भेद–भाव तथा ऊँच–नीच की भावना का तिरस्कार करते हुए सभी के लिए नाथ–सम्प्रदाय का द्वार खोल दिया तथा अनेक साधकों को हठयोग की दीक्षा देकर अपना शिष्य बनाया। समाज। समाज–सुधारक के रूप में उन्होंने अपने उपदेशों द्वारा सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य जैसे मूल्यों को भी पुनर्प्रतिस्थापित करने का प्रयास किया।

गुरू गोरक्षनाथ के जन्मस्थान के सम्बन्ध में भी परस्पर विरोधी सूचनाएँ मिलती है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने क्रुक्स और ग्रियर्सन द्वारा उल्लिखित एक अनुश्रुति की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट

किया है जिसमें यह कहा गया है कि गोरक्षनाथ सतयुग में पंजाब–स्थित पेशावर में, त्रेता में गोरखपुर में, द्वापर में द्वारका के समीप हरमुज में और कलियुग में काठियावाड़ के गोरखमढ़ी में प्रादुर्भूत हुए थे।[8] नेपाल अनुश्रुतियों के अनुसार वे पंजाब से चलकर नेपाल आए थे। गोरखपुर के गोरक्षपीठ की परम्परा भी उनके पंजाब स्थित गोरक्ष टीला से गोरखपुर आने की बात स्वीकार करती है। यद्यपि इस सम्बन्ध में मतैक्य का अभाव है तथापि इतना सुनिश्चित है कि उनके जीवन–काल में ही नाथ पंथ अत्यन्त लोकप्रिय हो गया था। इसके अनुयायी उत्तर में पंजाब से लेकर दक्षिण में महाराष्ट्र के नासिक–क्षेत्र तक तथा पूर्व में उत्तर–प्रदेश, नेपाल, बिहार, और बंगाल से लेकर पश्चिम में गुजरात और राजस्थान तक फैले हुए थे। गोरक्षनाथ जी की अद्‌भुत प्रमिभा का अनुमान इस तथ्य से होता है कि उन्होने संस्कृत और हिन्दी दोनों ही भाषाओं में बहुसंख्यक ग्रन्थों की रचना की थी। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने उनकी नाम से सम्बद्ध ग्रन्थों की लग्बी सूची अपने ग्रन्थ 'नाथ सम्प्रदाय' में दी है। यद्यपि इसमें सन्देह व्यक्त किया गया है कि ये भी ग्रन्थ गोरक्षनाथ जी के ही है अथवा इनमें अन्य योगियों की वाणियाँ भी संकलित हैं, तथापि अनेक विद्वान् कम से कम चौदह ग्रन्थों को निश्चायक रूप से गुरु गोरक्षनाथ द्वारा रचित मानते है।[9]

नाथ सम्प्रदाय के अन्तर्गत पातंजलि–योगसुत्र की अनेक मान्यताओं में संशोधन और परिवर्धन करते हुए योग–साधना को नया स्वरूप प्रदान किया। नाथपंथी योगियो ने हठयोग की जिस नई परम्परा का प्रारम्भ किया उसमें 'अष्टांगयोग' की जगह 'पडांग–योग' को ही स्वीकृति मिली। हठयोग में यम और नियम को कदाचित यौगिक–साधना का प्राथमिक चरण मानते हुए षडांग योग में केवल आसन, प्राणयाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा और समाधिक ही महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। किन्तु इसके साथ ही षट्‌कर्मों को जोड़े दिया तथा नेति, वस्ति, धौति आदि को शारीरिक एवं मानसिक शुद्धि के लिए उपयोगी माना गया। जहाँ तक नाथ–पंथ की मौलिक अवधारणाओं का प्रश्न है, पिण्ड और ब्रह्माण्ड में साम्य तथा शिव और शक्ति में अभेद नाथ पंथ की मौलिक अवधारणाएँ हैं। पातंजलि–योग साधना का उद्देश्य पुरुष का अपने स्वरूप में अवस्थान है और इसी को कैवल्य कहा गया है। इसकी प्राप्ति मूख्यतः ज्ञान से ही सम्भव मानी गई। दूसरी ओर नाथ पंथ के हठयोग का उद्देश्य शिवत्व की प्राप्ति को माना गया जिसके लिए ज्ञान और योग दोनों समान रूप से महत्वपूर्ण घोषित हुए। नाथ पंथ की साधना में गुरु के मार्गदर्शन और उसकी कृपा को भी विशेष महत्व दिया गया, जिसकी कोई सूचना पतंजलि के योगसूत्र में नहीं मिलती है। कुण्डलिनी–चक्र के जागरण का भी कोई उल्लेख पतंजलि के योग सूत्र में नही है, किन्तु हठयोग में कुण्डलिनी चक्र के जागरण को भी महात्व दिया गया है। नाथपंथ के अनुसार कुण्डलिनी चक्र के जागरण के उपरान्त चक्र में स्थित शिव से जीवात्मा का सामजस्य सम्भव है। इसी प्रकार हठयोग में अजपाजप के माध्यम से नादानुसन्धान की भी मुक्ति की साधना में महत्वपूर्ण भूमिका मानी गयी ह।

संदर्भः

1. द्र0, प्राचीन भारत में ग्राम एवं ग्राम्य जीवन, पृ0 18–19
2. ए0ई0 गाउ, फिलासफी ऑफ दि उपनिषद्‌स, लन्दन, 1882, पृ0 18; आर0 गार्वे, इन्साइक्लोपीडिया ऑफ रिलिजन एण्ड एथिक्त, ग्रन्थ 12, पृ0 833 और आगे।
3. दासगुप्ता, हिस्ट्री ऑफ इडियन फिलासफी, ग्रन्थ 1, पृ0 228
4. दर्शन और चिन्तन, प्रथम खण्ड, पृ0 245–49
5. द्र0, देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय, भारतीय दर्शन पृ0 125
6. सुखलाल जी संघवी, दर्शन और चिन्तन, प्रथम खण्ड, पृ0 245–52
7. नाथ सम्प्रदाय, पृ0 228
8. तत्रैव, पृ0 107
9. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, गोरखवाणी, भूमिका, पृ0 18–20